CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी ३३

समाज विकासमाला

…हेरा और देव

… मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला : १३६

मछेरा और देव

'अलिफ लैला' की एक रोचक कहानी

१९३६३

अनुवादक
शिवनाथसिंह 'शांडिल्य'

हि. ५५

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६१

मूल्य
१० सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सत्यपाल धवन
दि सैण्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस
दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बहुत सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाठकों से

हमारे देश में कहानियों का बहुत बड़ा भण्डार है। उनके पढ़नेवाले भी कम नहीं हैं। सच बात यह है कि हमारा देश ही नहीं, दुनिया का कोई भी छोर ऐसा नहीं है, जहां आदमी हों और कहानियां न हों।

अपनी इस माला में नई-पुरानी बहुत-सी कहानियां हमने दी हैं। इस पुस्तक में हम 'अलिफ लैला' की एक बहुत ही मनोरंजक कहानी दे रहे हैं। 'सिंहासन बत्तीसी' और 'बैताल-पच्चीसी' की तरह 'अलिफ लैला' में भी कहानियां हैं और एक-दो या दस-बीस नहीं, पूरी एक हजार हैं। उसे कहानियों का खजाना कहें तो बेजा न होगा।

आप इस रोचक कहानी को स्वयं तो पढ़ें ही, दूसरों को भी पढ़वायें।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मछेरा और देव

बहुत दिन की बात है। समुद्र के किनारे एक मुसलमान मछेरा रहता था। वह बड़ी मेहनत से अपना और बीवी-बच्चों का पेट पालता था। वह रोज सुबह नदी पर चला जाता और जाल पानी में डाल देता। जो मछलियां हाथ आती, उन्हें शहर में लाकर बेच डालता।

एक दिन वह बहुत सवेरे नदी के किनारे पहुंचा और पानी में जाल डाल दिया। जब खींचा तो मालूम हुआ कि जाल बहुत भारी है। बूढ़ा मछेरा बड़ा खुश हुआ। समझा, बहुत बड़ी मछली फंसी है। मगर जब जाल बाहर निकाला तो देखा, उसमें गधे की लाश है। बड़ा निराश हुआ और दूसरी बार जाल डाला। अब की बार कीचड़ और मिट्टी आई। जाल को ठीक करके फिर पानी में फेंका, पर इस बार भी कोई मछली हाथ न लगी। बेचारा उदास होकर अपने भाग्य को कोसने लगा।

सुबह का उजाला फैल चुका था। सूरज निकलने-वाला था। मछेरे ने नमाज पढ़ी और फिर दुआ मांगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"ए खुदा, तू जानता है कि मैं एक दिन में बस चार मरतबा नदी में जाल डालता हूं। आज तीन मरतबा कुछ भी हाथ नहीं आया। एक मरतबा कोशिश करनी बाकी है। हे खुदा, मुझपर दया कर। कहीं मेरे बाल-बच्चे आज भूखे न रह जायं।"

यह दुआ मांगकर वह उठा और खुदा का नाम लेकर जाल को चौथी बार नदी में फेंका। जब खींचा तो बहुत ही भारी मालूम हुआ। मछेरे ने समझा कि अबकी बार जरूर बहुत-सी मछलियां फंसी हैं। बड़ी मुश्किल से जाल को बाहर खींचा। खोलकर देखा तो कोई मछली नज़र नहीं आई। सिर्फ एक पीतल का लोटा निकला, जो बहुत भारी था।

मछेरे ने सोचा कि हो-न-हो इस लोटे में जरूर कुछ है। तभी तो यह इतना भारी है। लोटे का मुँह शीशे से बड़ी मजबूती के साथ बन्द था और ऊपर मोहर लगी हुई थी। मछेरे ने खुश होकर दिल में कहा "अगर इसमें से कुछ भी न निकला तो मैं लोटे को ही बेचकर अनाज मोल ले लूंगा। बाल-बच्चे भूखे तो न रहेंगे।"

उसने छुरी से लोटे का मुँह खोला तो उसमें से कुछ न निकला। मछेरा बहुत ही हैरान हुआ कि फिर यह इतना वजनी क्यों है। इतने में हीं लोटे के अन्दर से धुआं निकलना शुरू हुआ। बूढ़ा मछेरा डरा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उठकर बहुत दूर खड़ा हो गया। लोटे से धुआं निकलता रहा। इतना धुआं निकला कि नदी के किनारे धरती से आसमान तक धुआं-ही-धुआं दिखाई देने लगा।

मछेरा सहमा हुआ खड़ा था कि उस धुयें ने सिमट-सिमटाकर एक लम्बे-चौड़े और भयानक देव का रूप धारण कर लिया। मछेरे ने चाहा कि भाग जाय, मगर डर के मारे उसका एक-एक कदम मन-मन भर का हो गया था। इतने में उसने सुना, देव धीरे-धीरे कह रहा था, "ए सुलेमान पैगम्बर, खुदा के लिए मेरा कसूर माफ कर। मैं फिर कभी तेरी तौहीन न करूंगा।"

बूढ़े मछेरे ने अपने दिल को मजबूत किया और ज़ोर से कहा, "ए देव, तू क्या कह रहा है ? हजरत सुलेमान को मरे हुए अठारहसौ बरस बीत चुके हैं। यहां तो सिर्फ मैं खड़ा हूं। मुझसे बात कर और बता कि तू कौन है ? यह भी बता कि तुझे इस लोटे में किसलिए कैद किया गया है ?"

देव ने नफरत से मछेरे की तरफ देखा, फिर बोला "ओ मिट्टी के पुतले, तू सलीके से बात करना नहीं जानता। मुझको देव कहकर पुकारता है ?"

मछेरे ने कहा, "देव कहकर न पुकारूं तो क्या जानवर कहूं।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देव को बड़ा क्रोध आया और गरजकर बोला, "खबरदार, मेरे हाथों से कत्ल होने से पहले अदब से बात कर।"

मछेरे ने कहा, "मैंने तो तुझे कैद से छुड़ाया है। तू मेरे अहसान का बदला यह देगा कि मुझे जान से मारेगा ?"

देव ने कहा, "हां, लेकिन मैं एक बात कर सकता हूं और वह यह है कि तू अपनी मौत का ढंग आप ही पसंद करले। जिस तरह तू चाहेगा, मैं उसी तरह तेरी जान ले लूंगा।"

मछेरा सिटपिटाकर बोला, "तू बड़ा कृतघ्न है। मैंने तेरा कौन-सा कसूर किया है, जिसके बदले में तू मेरी जान लेना चाहता है ?"

देव ने कहा, "सुन, मैं उन देवों में से हूं, जो खुदा की खुदाई को नहीं मानते थे। जब सुलेमान पैगम्बर का जमाना आया तो सबके-सब देव और परियां मिलकर उनके मातहत हो गये। लेकिन मैंने हजरत सुलेमान की बात नहीं मानी और झगड़ा करने लगा। हजरत सुलेमान ने नाराज होकर मेरी गिरफ्तारी का हुक्म दिया। वजीर ने मुझे फौरन गिरफ्तार कर लिया और वजीर के हुक्म से मुझे इस पीतल के लोटे में कैद कर लिया और लोटे का मुंह शीशे से बन्द करके ऊपर अपनी मोहर लगा दी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर लोटे को नदी में डाल दिया।

"मैंने इस कैद में कसम खाई कि जो पहले पांच-सौ बरस के अरसे में मुझे कैद से छुड़ावेगा, मैं उसे इतना मालदार बना दूंगा कि उसकी सात पुश्त गरीबी का मुंह न देखेंगी, लेकिन उन पांच सौ-बरस के अन्दर किसीने मुझे रिहाई नहीं दिलाई। फिर मैंने कसम खाई कि अब सात-सौ बरस के अरसे में जो इंसान मुझे छुटकारा दिलावेगा, मैं दुनिया के सारे खजाने उसे दिला दूंगा, लेकिन इस अरसे में भी किसी ने मुझे न निकाला।

"फिर मैंने कसम खाई कि जो हज़ार साल के अन्दर-अन्दर मुझे छुटकारा दिलायेगा, मैं उसे बहुत बड़ा बादशाह बना दूंगा और उसकी खिदमत में हाजिर रहकर, हर रोज उसके तीन हुक्म माना करूंगा। लेकिन इस अरसे में भी कोई न आया।

"फिर मैं झुंझला उठा और कसम खाई कि जो मुझे अब नदी से निकालेगा मैं उसको बड़ी बेरहमी से मार डालूंगा। लेकिन इतनी रियायत उसके साथ करूंगा कि जिस तरह वह अपनी मौत को चाहेगा उसी तरह से उसे मारूंगा। इतने दिनों के बाद आज तूने मुझे निकाला है। अब बता तुझे किस तरह मारूं ?"

बेचारा मछेरा सोचने लगा कि में बड़ा अभागा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हूं, जो भलाई का यह बदला मिल रहा है ! उसने बड़ी नरमाई से कहा, "तू अपनी कसम को तोड़ दे। मेरे बाल-बच्चों पर दया कर। खुदा तेरे कसूरों को माफ कर देगा।"

देव ने कहा, "यह कभी नहीं होने का।"

अचानक मछेरे को एक तरकीब सूझी। उसने देव से कहा, "अच्छी बात है। मैं मरने के लिए राजी हूं। लेकिन तुझे खुदा की कसम, इतना तो बता दे कि तू इतना बड़ा देव होकर इस छोटे-से लोटे में किस

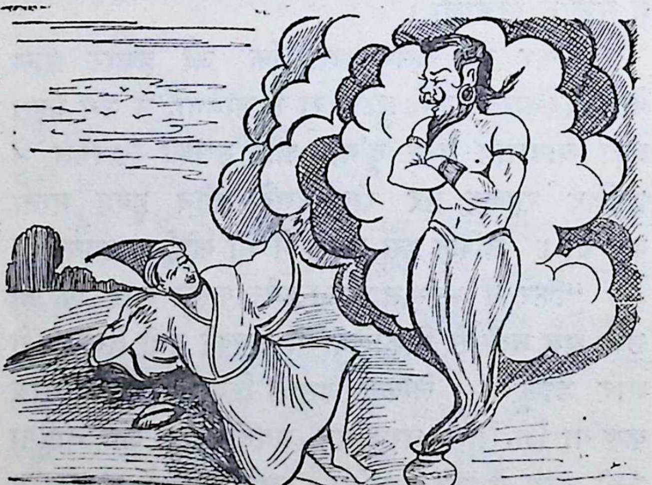

देव लोटे में प्रविष्ट हो रहा है।

तरह समा गया ! मुझे तो तेरी सारी कहानी झूठ मालूम होती है। मैं जबतक अपनी आंखों से तुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोटे में न देख लूंगा तबतक तेरी बात पर हर्गिज यकीन न करूंगा।"

इतना सुनते ही देव का शरीर धुआं बनकर फैल गया और वह धीरे-धीरे सिमटकर लोटे में घुसने लगा। जब सारा धुआं अंदर चला गया तो लोटे में से आवाज आई, "ओ मछेरे, ले देख, मैं लोटे में हूं।"

मछेरे ने कोई उत्तर नहीं दिया। फुर्ती से ढकना उठाकर लोटे पर रख दिया और खूब बन्द करके बोला, "ए बदमाश, अब तू मेरे कब्जे में आगया। तू तमीज़ से बात कर और बता, मैं तुझे किस तरह मारूं। नदी में डाल दूं या जमीन में दफन कर दूं?"

देव मछेरे की बातों से घबराया। उसने पहले तो ज़ोर लगाकर लोटे से निकलना चाहा, लेकिन उसपर सुलेमान पैगम्बर की मोहर का ढकना रक्खा था। सिर टकराकर रह गया। फिर बड़ी धीमी आवाज में बोला, "ए भाई मछेरे, मुझे फिर नदी में न डाल। मैं तो तुझसे हँसी करता था। अफसोस तूने मेरी बातों को सही समझ लिया। भला कोई अपने साथ अहसान करनेवाले के साथ बुराई करता है।"

मछेरा बोला, "ए देव, पहले तो तू बड़ी शेखी मारता था। अब तुझे क्या हो गया, जो इतनी नरमाई से बातें कर रहा है! मैं तो अब तुझे जरूर नदी में डाल दूंगा और किनारे पर एक झोपड़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनाकर रहूंगा। जब कोई मछेरा इधर आयेगा तो उसे बताया करूंगा कि यहां एक कृतघ्न और नीच देव कैद है। कोई उसे बाहर न निकाले।"

देव ने गिड़गिड़ाकर कहा, "ओ नेक मछेरे, खुदा के वास्ते मेरी जान पर रहम कर। अब मुझे नदी में न डाल। मैं तेरी इस नेकी के बदले तुझे बहुत-कुछ दूंगा।"

मछेरे ने कहा, "नहीं, तू बड़ा मक्कार है। तेरी बात का क्या भरोसा! अगर तुझे छोड़ दूंगा तो फिर अपनी जान को मुसीबत में डालूंगा। तू मेरे साथ वही सलूक करेगा, जैसा कि बादशाह ग्रेक ने हकीम दोबान के साथ किया था।"

यह सुनकर देव ने पूछा, "ग्रेक बादशाह ने हकीम दोबान के साथ क्या किया था? भाई मछेरे, पहले तू मुझे वह कहानी सुनादे।"

मछेरे ने कहा, "अच्छा, ले सुन।"

ग्रेक बादशाह और हकीम दोबान की कहानी

"फारस देश के शहर रोमान में ग्रेक नाम का एक बादशाह रहता था। उस बादशाह को एक बुरी बीमारी लग गई। देश के हकीमों ने बहुतेरे इलाज किये, तरह-तरह की दवाइयां दीं, किन्तु कोई फायदा न हुआ। संयोग से एक बहुत बड़ा हकीम उस शहर में आ निकला। उसका नाम दोबान था और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह यूनान देश का रहनेवाला था। यह हकीम बड़ा विद्वान और हर तरह की जड़ी-बूटियों का जानकार था। इस शहर में आकर जब उसे बादशाह की बीमारी का पता चला तो वह बादशाह की सेवा में आया और उससे प्रार्थना की, "अगर हुकुम हो तो मैं आपका इलाज करूं। मैं आपको बिना कोई दवा खिलाये-पिलाये अच्छा कर सकता हूं।"

बादशाह ने कहा, "अगर तू मुझे अच्छा कर देगा तो मैं तेरे साथ बहुत नेक सलूक करूंगा।"

दोबान ने जबाब दिया, "खुदा ने चाहा तो ऐसा ही होगा।"

हकीम दोबान बादशाह से विदा होकर अपने घर आया। पहले कुछ दवाइयां खरल कीं और फिर एक गेंद और बल्ला बनाया। ये गेंद और बल्ला दोनों अन्दर से खोखले थे। उसने दवाओं का चूरा उस गेंद और बल्ले में भर दिया। अगले दिन हकीम बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ और बोला, "खुदा की दुआ से दवा का सारा इंतजाम हो गया है। आप घोड़े पर सवार होकर चलिये। थोड़ी देर गेंद से खेल आइये।"

बादशाह हकीम के कहने से घोड़े पर सवार हो गया और अपने दरबारियों को साथ लेकर मैदान में चला गया। वहां हकीम ने गेंद-बल्ला बादशाह को दिया और कहा, "आप इस गेंद-बल्ले से इतना खेलें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि बदन पसीना-पसीना हो जाय ! इस तरह वे दवाएं जो इस गेंद-बल्ले में भरी हुई हैं, आपके हाथ की गर्मी से देह में चली जायंगी और अपना असर दिखायेंगी। जब आप थक जायं तो गरम पानी में स्नान करके सो जायं। खुदा ने चाहा तो आप सबेरे तक ठीक हो जायंगे।"

बादशाह गेंद-बल्ले से खेलने लगा। इतने समय तक खेलता रहा जबतक कि उसके शरीर से खूब पसीना न छूटने लगा। फिर वह गरम पानी से नहाया और बिस्तर पर लेटकर खूब मीठी नींद सोया।

अगले दिन सुबह जब आंख खुली तो देखता क्या है कि बीमारी का कोई निशान भी नहीं रहा है और वह बिल्कुल चंगा हो गया है। बादशाह को इस इलाज से बड़ी खुशी हुई और वह बढ़िया कपड़े पहनकर सिंहासन पर बैठ गया। अमीरों और वज़ीरों ने बधाई दी। उसी समय हकीम दोबान भी आया। बादशाह ने हकीम को बड़े आदर से अपने पास बैठाया, उसकी बड़ी तारीफ़ की और उसे सुनहरी कपड़े और बहुत-सा धन इनाम में दिया। उसी दिन से हकीम दोबान बादशाह का कृपापात्र बन गया।

उस बादशाह का दीवान बड़े ओछे विचारों का था। उसने देखा कि बादशाह एक परदेशी पर इतनी कृपा कर रहा है तो वह हकीम दोबान से जलने लगा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसका दुश्मन बन गया। वह इस उधेड़-बुन में रहने लगा कि किसी तरह से हकीम को बादशाह की नजरों से गिरा दे।

एक दिन बादशाह अकेला बैठा हुआ था। वजीर मौका पाकर उसके पास गया और बोला, "महाराज, यह हकीम कोई जासूस है और किसी दूसरे बादशाह का भेजा हुआ है। इसलिए इसे ज्यादा मुंह लगाना ठीक नहीं है। आपकी मेहरबानी से अब उसका इतना असर बढ़ गया है कि कभी भी आपके लिए खतरा पैदा कर सकता है। इस संकट से बचने की एक ही तरकीब है कि इस धोखेबाज हकीम का खात्मा करा दिया जाय।"

बादशाह ने कहा, "नहीं, हकीम दोबान ऐसा आदमी नहीं हो सकता। अगर उसे धोखा देना होता तो वह मुझे बीमारी से क्यों अच्छा करता। वह बड़ा होशियार है और दुनिया में आज उसकी बराबरी का दूसरा हकीम नहीं है। मैं तेरे कहने पर ऐसे लायक आदमी को सजा दूं तो मुझे भी उस नेक आदमी की तरह पछताना पड़ेगा, जिसने धोखे में आकर अपने तोते को मार डाला था।"

वजीर ने पूछा, "तोते की कहानी किस तरह है?"

तोते की कहानी

ग्रेक बादशाह ने कहना शुरू किया—एक आदमी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनी औरत को बड़ा प्यार करता और वह उसके लिए तरह-तरह की बढ़िया चीजें कपड़े-गहने बगैरा लाया करता था। एक बार उसने एक बोलता हुआ तोता खरीदा और लाकर अपनी प्यारी बीवी को दे दिया। उस तोते में यह सिफत थी कि घर में जो बात वह अपनी आंखों से देखता था, उसे अपने मालिक से कह दिया करता था।

एक मरतबा वह आदमी बाहर घूमने गया। कुछ दिनों बाद वापस लौटा तो तोते ने घर की सब बातें उससे कह दी। इन बातों में बहुत-सी बातें ऐसी बतलाईं, जिनको वह औरत अपने पति से छिपाना चाहती थी। तोते की बातें सुनकर वह आदमी अपनी औरत पर बहुत बिगड़ा और बात इतनी बढ़ी कि दोनों की आपस में लड़ाई हो गई। औरत को पहले तो अपनी दासियों पर शक हुआ कि शायद उन्होंने उसके पति से सब बातें कहदी हों, लेकिन जब दासियों से पूछा तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। फिर तो औरत समझ गई कि हो-न-हो, ये सब इस तोते की ही करतूत है। अब स्त्री सोचने लगी कि किसी तरह इस तोते को अपने पति के सामने झूंठा साबित करना चाहिए, जिससे वह फिर कभी उसकी बात पर यकीन न करे।

एक रात की बात है। उसका पति किसी दावत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में बाहर गया हुआ था। उसकी औरत ने अपनी दासियों को हुक्म दिया कि तुममें से एक आज सारी रात इस तोते के पिंजरे के पास चक्की चलाती रहे।

दासियां इसी तरह सारी रात करती रहीं।

दूसरी पिंजरे पर पानी डाले। तीसरी दीपक की रोशनी में शीशे को चारों तरफ घुमाती रहे।

दासियां इसी तरह सारी रात करती रहीं। जब सबेरे वह आदमी घर आया तो उसने तोते से पूछा, "कहो मियां मिट्ठू, रात कैसी कटी", तोते ने कहा, "मैं तो सारी रात मुसीबत में रहा। बादल और बिजली की कड़क और बारिश से बड़ी परेशानी रही।" उस आदमी को क्या पता था कि उसकी औरत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने तोते को धोखा देने के लिए रात को क्या कराया था। उसने सोचा कि रात को तो आसमान में घटा का निशान भी नहीं था, फिर बिजली कहां चमकी और मेह कहां से बरसा! उस आदमी ने समझा कि तोता झूठ बोलता है। यह इसी तरह झूठी बातें सुनाता रहा है। उसे बड़ा गुस्सा आया और उसने फौरन तोते को पिंजड़े से निकाल लिया और जमीन पर पटककर मार डाला।

जिस रात तोते को धोखा दिया गया था, एक पड़ोसिन घर में आई थी और सारी बातें अपनी आंखों से देख गई थी। उसे इस तरह तोते के मारे जाने का हाल मालूम हुआ तो उसने उस आदमी से उसकी औरत की चालाकी की सारी बातें सुनादीं और कहा कि तोते ने चक्की की आवाज को बादल की गरज, पानी के गिरने को बारिश की बूदें और शीशे में चमकती हुई दीपक की रोशनी को बिजली की चमक समझ लिया था।

उस आदमी को जब अपनी औरत की चालाकी मालूम हुई तो इसे वह अपने किये पर बहुत पछताया। अब क्या हो सकता था।

बादशाह ने यह कथा सुनाकर दीवान से कहा, "हकीम दोबान बिल्कुल बेकसूर है। अगर मैं उसे कत्ल कराता हूं तो बाद में मुझे उसी तरह पछतावा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना पड़ेगा, जिस तरह वह आदमी तोते को मार कर पछताया था।"

दीवान ने प्रार्थना की, "मैंने जो अपने जासूस इस हकीम के देश में भेज रक्खे थे उनसे मुझे पता चला है कि यह हकीम आपका दुश्मन है और किसी दिन अपनी दवाओं में जहर मिलाकर दे देगा और आपकी जान लेकर रहेगा।"

बादशाह को दीवान की बात पर यकीन हो गया और एक सरदार को हुक्म दिया कि हकीम दोबान को दरबार में लाकर हाजिर करो।

जब हकीम दीवान हाजिर हुआ तो बादशाह ने गुस्से से कहा, "ए हकीम, तू मुझे धोखा देने आया है। लेकिन अब तेरा सारा भेद खुल गया है। तेरा कसूर इतना बड़ा है कि मैं तुझे मौत की सजा देता हूं।"

बादशाह के मुंह से यह सुनकर हकीम हक्का-बक्का रह गया और दिल में पछताने लगा कि न मैं इसे अच्छा करता न मेरी जान जाती। उसने बादशाह को बहुत समझाया, बहुत गिड़गिड़ाया, लेकिन बादशाह के कान पर जूं तक न रेंगी।

अब हकीम को विश्वास हो गया कि बादशाह बिल्कुल दुश्मनों के कहने में आ गया है। उसने प्रार्थना की कि मुझे एक दिन की मोहलत दी जाय, ताकि मैं मकान पर जाकर अपनी दवाओं को और सामान को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोगों में बाट आऊं। मेरे पास एक ऐसी किताब भी है, जो आपके यहां रखने के लायक है।

बादशाह ने पूछा, "वह किताब कैसी है ?" हकीम ने कहा, "इस किताब में बहुत ही अच्छी-अच्छी बातें लिखी हुई हैं। जब मेरा सिर कट जाय तो आप अपने हाथ से इस किताब को खोलियेगा और छटे सफे पर तीसरी लाइन पढ़ लीजियेगा। अगर किताब की कोई बात समझ में न आवे तो पूछने पर मेरा कटा हुआ सिर ठीक-ठीक जवाब देगा।" बादशाह ने सोचा, यह तमाशा भी देखना चाहिए।

हकीम को एक दिन की मोहलत देदी गई। सिपाही उसके साथ गये और घर के बाहर पहरा बैठा दिया गया।

अगले दिन सुबह हकीम एक बहुत बड़ी किताब कपड़े में लपेटे बादशाह के दरबार में आया और बोला, "अगर आपकी खुशी मेरी मौत ही में है तो मेरी जान ले लीजिये। जब मेरा सिर कट चुके तो इस किताब को एक तश्तरी में रखियेगा, फिर उसे खोलकर जो कुछ आप पूछेंगे, मेरा सिर बिल्कुल ठीक जवाब देगा।"

बादशाह ने किताब ले ली और जल्लाद को इशारा किया। उसने फौरन हकीम दोबान का सिर काट डाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब हकीम का सिर काटकर तश्तरी में रक्खा गया तो सिर से खून बहना बन्द हो गया। बादशाह और सारे दरबारियों को बड़ा अचरज हुआ। फिर कटे हुए सिर ने आंखे खोलीं और बादशाह से कहा, "किताब खोलिये।"

बादशाह ने किताब खोलकर चाहा कि छः सफ़ों को गिनकर उल्टे, लेकिन वे पन्ने आपस में इस तरह चिपके हुए थे कि आसानी से उल्टे नहीं जाते थे। बादशाह ने बार-बार उंगली में थूक लगाकर सफों को उलटा। तब कहीं वे उलटे। पर बाद का पन्ना बिल्कुल कोरा था। उसने हकीम के सिर से कहा, "यहां तो कुछ भी नहीं लिखा।" हकीम के सिर ने उत्तर दिया, "और पन्ने उलटिये।" आगेके सफे भी आपस में चिपके हुए थे। बादशाह बार-बार उंगली को थूक से गीली करता और पन्ने उलटता, मगर जो सफा निकलता, खाली होता।

सफे उलटते-उलटते एकदम बादशाह की हालत बिगड़ गई और पलभर में सिंहासन से नीचे गिरकर मर गया।

वास्तव में हकीम बादशाह से अपने खून का बदला लेना चाहता था। उसने पुस्तक में पन्नों पर जहर मलकर उन्हें चिपका दिया था। बादशाह ने पन्ने पलटने के लिए उंगली गीली की तो उसपर जहर लग गया। उंगली दुबारा गीली करने को मुंह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में डाली तो जहर मुंह में पहुंच गया।

जब बादशाह मर रहा था तो हकीम का सिर बहुत जोर से हँसा और पुकारकर बोला, "जालिम बादशाह, देख बेकसूर आदमी की जान लेने का यह नतीजा होता है।"

बादशाह ग्रेक की कहानी सुनाकर मछेरे ने देव से कहा, "जैसी कृतघ्नता बादशाह ने हकीम के साथ दिखाई वैसा ही तूने किया। फिर जैसे ग्रेक बादशाह को अपने किये की सजा मिली वैसे ही अब तू भी कैद की सजा भुगत। अगर तू मुझे मारने का इरादा न करता तो दूसरी बार इस कैद में न फंसता।"

अब तो देव बहुत घबराया और बोला, "भैया मछेरे, मैं खुदा की कसम खाता हूं कि तुझे नहीं मारूंगा। तू मुझे छोड़ दे। मैं वादा करता हूं कि तुझे दौलत पैदा करने की ऐसी तरकीब बता दूंगा, जिससे तू बहुत जल्द मालामाल हो जायगा।"

जब देव ने बहुत ही हाथ-पैर जोड़े और हर तरह से अपनी सचाई का विश्वास दिलाया तो मछेरे का दिल पसीज गया और उसने लोटे का मुंह खोल दिया। मुंह खोलते ही उसमें धुआं निकलना आरंम्भ हो गया और फैलकर ज़रा-सी देर में देव बन गया।

देव ने बाहर निकलते ही लोटे को तो नदी में फैंक दिया और मछेरे से कहा, "अपना जाल उठा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और मेरे पीछे-पीछे आ।"

मछेरा अपना जाल उठा कर देव के पीछे-पीछे चल दिया। चलते-चलते दोनों एक पहाड़ की चोटी पर पहुंच गये। उसके दूसरी तरफ उतरे तो मछेरे ने देखा, वहां पहाड़ों से घिरा हुआ एक तालाब है, जिसमें कई रंग की हजारों मछलियां तैर रही हैं। देव ने तालाब के किनारे पहुंचकर कहा, "इस तालाब में जाल डाल। जितनी मछलियां मिलें, पकड़-कर बादशाह के पास ले जा। वह तुझे इतना इनाम देगा कि तू बहुत जल्द धनवान हो जायगा। लेकिन एक बात हमेशा याद रखना। इस तालाब में दिन में एक बार ही जाल डाला करना।"

यह कहकर देव ने ठोकर मारी। धरती फट गई और वह उसमें समा गया।

हब्शी और जादूगरनी की कहानी

बूढ़े मछेरे ने तालाब में जाल डालकर खींचा तो उसमें से चार रंग की चार मछलियां निकलीं। सफेद, लाल, पीली और काली। मछेरा इन मछलियों को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने देव के कहने के अनुसार दूसरी बार तालाब में जाल न डाला। और चार मछलियां लेकर शहर को लौट आया।

दरबार में जाकर उसने चारों मछलियां बादशाह को भेंट कीं। बादशाह रंग-बिरंगी मछलियों को देख-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर बहुत खुश हुआ। उसने ऐसी सुन्दर मछलियां पहले कभी न देखी थीं। बादशाह ने आज्ञा दी कि

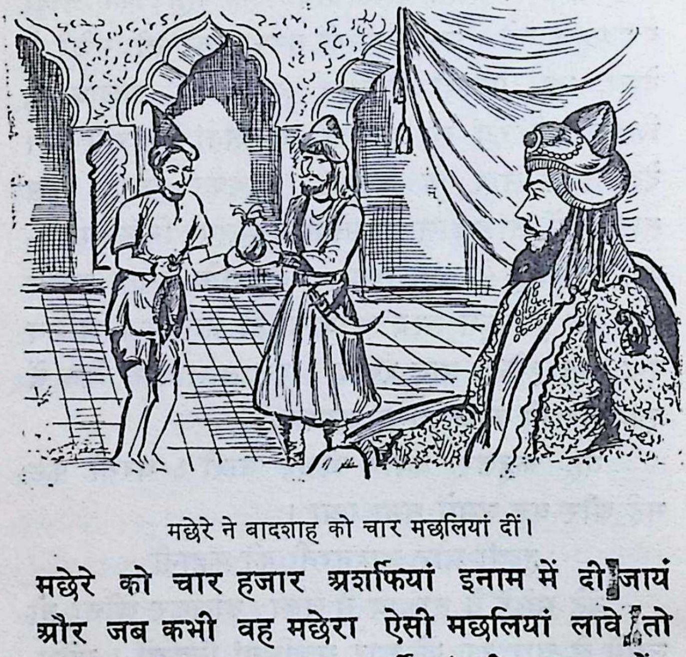

मछेरे ने बादशाह को चार मछलियां दीं।

मछेरे को चार हजार अशर्फियां इनाम में दी जायं और जब कभी वह मछेरा ऐसी मछलियां लावे तो फी मछली एक हजार अशर्फियां दी जाया करें। मछेरे को चार हजार अशर्फियां मिल गईं और वह अमीरों की तरह जिन्दगी बिताने लगा।

बादशाह ने दीवान को आज्ञा दी कि इन मछलियों को रसोईघर में ले जाओ और खाना पकानेवाली से कहो कि इनको बहुत अच्छी तरह से पकावे।

दीवान रसोईघर में गया और मछलियां दे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आया। रसोई बनानेवाली ने मछलियों को साफ़ किया और नमक-मिर्च लगाकर भूनने के लिए तवे में छोड़ दिया। जब वे एक तरफ से भुनकर लाल हो गईं तो बाबरचिन उनको उलटने लगी। लेकिन उसी समय हुआ क्या कि अचानक रसोईघर की दीवार फट गई और उसमें से एक बड़ी खूबसूरत औरत निकल आई। वह बड़े सुन्दर कपड़े और गहने पहने हुए थी और उसके हाथ में एक छड़ी थी।

बाबरचिन ने जब यह नज़ारा देखा तो डरकर पीछे हट गई। वह औरत आकर तवे के पास खड़ी हो गई और एक मछली को छड़ी मारकर बोली, "मछली-मछली, क्या तू अभी तक अपनी बात पर अड़ी हुई है?" मछली कुछ न बोली। उस स्त्री ने फिर उसी तरह पूछा। इसपर चारों मछलियां अपनी पूंछ टेककर खड़ी हो गईं और एक साथ बोलीं, "सच है, सच है। अगर तुम हमें मानोगी तो हम भी तुम्हें मानेंगे। तुम अपना फ़र्ज पूरा करोगी तो हम भी करेंगी।"

जब मछलियों ने यह उत्तर दिया तो उस स्त्री ने नाराज़ होकर तवे को उलट दिया। सभी मछलियां आग में जा पड़ीं और जलकर राख हो गईं। इसके बाद वह स्त्री फिर उसी दीवार में घुस गई और दीवार बराबर हो गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बेचारी बाबरचिन यह सब देखकर बेहोश हो गई। कुछ देर बाद जब होश आया तो मछलियों को उठाने के लिए चूल्हे के पास आई। मगर इतनी देर में मछलियां राख हो गई थीं। बाबरचिन डर के मारे रोने लगी। सोचती कि यदि यह कहानी बादशाह को सुनाऊंगी तो वह क्यों विश्वास करेंगे? इतने में दीवान आया और मछलियों को मांगा। बाबरचिन बेचारी कहां से देती। उसने रो-रोकर सारा हाल बयान कर दिया।

दीवान उसी समय बादशाह के पास गया और रसोईघर की वह घटना उसे सुनादी।

बादशाह उसे सुनकर अचरज में रह गया। उसने उसी समय मछेरे को बुलवाया और उससे उसी तरह की चार और मछलियां लाने को कहा।

मछेरा फिर उसी तालाब पर पहुंचा और जाल डाला। उसी तरह की चार मछलियां और फंसी। उसने लाकर वजीर के सामने रख दीं। वजीर ने मछेरे को चार हजार अशर्फियां दीं और मछलियां लेकर स्वयं बाबरचीखाने में गया। दरवाजा बन्द करके बाबरचिन से कहा कि इन मछलियों को मेरे सामने भूनकर तैयार कर।

लेकिन फिर वही हुआ, जो पहले हुआ था।

वजीर ने सारा हाल अपनी आंखों से देखा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बादशाह से कह-सुनाया।

बादशाह बड़े सोच में पड़ गया। बोला, "अच्छा यह सब मैं खुद अपनी आंखों से देखना चाहता हूं।"

मछेरे को बुलाकर फिर मछलियां मंगाई गईं। इस बार बादशाह ने मछलियां भूनने का सामान अपने खास कमरे में मंगवाया और दीवान को हुकुम दिया कि हमारे सामने मछलियां तैयार करो।

दीवान ने मछलियां साफ़ करके मसाला लगाकर भूननी शुरू कीं और जब वे एक तरफ भुनकर सुर्ख हो गईं तो दीवान ने उन्हें उलटना चाहा। उलटते ही पहले जैसा हुआ।

बादशाह ने यह हाल देखकर दीवान से कहा, "यह औरत कौन है? ये मछलियां कौन हैं? ये जो बातें करती हैं, उनका क्या मतलब है? इस भेद को खोलने की कोशिश करो।"

दीवान ने उसी समय मछेरे को बुलवाया और पूछा, "तू इन मछलियों को कहां से पकड़कर लाता है?" मछेरे ने उस तालाब का पता बता दिया।

बादशाह ने उसी समय फौज तैयार कराई और मछेरे को साथ लेकर उस तालाब की तरफ चल दिया।

वहां बादशाह ने चार पहाड़ियों के बीच एक विशाल और सुन्दर तालाब देखा। उसका जल बड़ा साफ़ था और उसमें चार रंग की मछलियां तैरती फिर रही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थीं। बादशाह इस तालाब के किनारे रुक गया। उसने अपने मुसाहिबों से कहा, "यह तालाब शहर के इतने पास है, लेकिन कितने अचरज की बात है कि तुम लोगों ने इसे पहले कभी नहीं देखा।"

बादशाह अपने डेरे में आराम करने चला गया। जब रात हो गई और आसमान में तारे चमकने लगे तो उसने दीवान को बुलाकर कहा, "मुझे बड़ा ताज्जुब है कि यह तालाब मेरे शहर के पास कैसे बन गया। मैं इस भेद को जानना चाहता हूं। मैं अकेला तालाब पर जाता हूं। तुम मेरे डेरे में रहो। मेरे जाने का हाल किसीको मालूम न हो।

बादशाह पहाड़ी पर चढ़कर दूसरी तरफ उतर गया। सामने एक मैदान दिखाई दिया। उसको पार करके आगे पहुंचा तो देखता क्या है कि सामने एक विशाल और सुन्दर महल खड़ा है। बादशाह खुश हुआ कि अब कोई भेद जरूर मिलेगा।

जब उस महल के पास पहुंचा तो देखा कि उससे सटा काले रंग का एक किला भी है, जिसकी दीवारों पर फ़ौलाद चढ़ा है और शीशे की तरह चमक रहा है। किले का दरवाजा खुला हुआ था। बादशाह ने दरवाज़े पर पहुंचकर आवाज़ दी। मगर कोई न बोला। ज़ोर-ज़ोर-से दरवाज़ा खटखटाया, लेकिन किसीने उत्तर न दिया, न कोई आदमी दिखाई दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बादशाह को बड़ा विस्मय हुआ कि इतना बड़ा किला है और सूना पड़ा है। वह इधर-उधर देखता हुआ किले के अन्दर गया। कई बार आवाज दी, मगर बेकार। सामने एक दालान दिखाई दे रहा था। बादशाह उसमें चला गया। फर्श पर बड़ा खूबसूरत कालीन बिछा था और दीवारों पर रेशम मढ़ा हुआ था। आगे के दरवाजों पर मखमल के परदे लटक रहे थे, जिनपर सुनहरी काम हो रहा था। सामने बारहदरी में एक हौज़ साफ़ पानी से लबालब भरा था। उसके चारों कोनों पर सोने के चार शेर खड़े थे। हरेक शेर के मुंह से पानी का फव्वारा छूटकर हौज में गिरता था। बड़ा सुहावना लगता था।

बादशाह एक कमरे से दूसरे कमरे में गया और अजीब-अजीब तरह ही चीजों को देखकर हैरत में पड़ गया। वह इतना घूमा कि थक गया, मगर किसी जगह कोई आदमी दिखाई न दिया। आखिर वह थककर एक जगह बैठ गया और चारों तरफ देखने लगा। अचानक एक कमरे में से उसे बड़ी ही करुण आवाज सुनाई दी। पर्दा उठाकर अन्दर झांका तो देखता क्या है कि एक बहुत ही नौजवान राजा की पोशाक पहने सिंहासन पर बैठा है। वह रोता और विलाप करता है और बार-बार अपने भाग्य को कोसता है। बादशाह उठकर उसके निकट पहुंचा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस युवक ने बादशाह को देखते ही एक ठंडी आह भरी, फिर अपने कपड़ों को ऊपर उठाकर बोला, "यह देख"

बादशाह ने देखा तो उसका नीचे का सारा धड़ पत्थर का था।

यह देखकर बादशाह बोला, "मैं तो यहां की एक-एक चीज को देखकर अचम्भा कर रहा हूं। मगर तुम्हारा हाल देखकर तो मेरे अचरज का ठिकाना नहीं रहा। खुदा के लिए अपना सब हाल मुझे सुनाओ।"

उस युवक ने कहा, "मेरा बाप महमूद काले टापू का बादशाह था। उसकी राजधानी उस जगह थी, जहां अब मछलियों का तालाब है। जब मेरा बाप मर गया तो उसकी जगह मैं तख्त पर बैठा। मैंने अपना ब्याह एक बहुत ही खूबसूरत लड़की से किया, लेकिन वह औरत जादूगरनी थी। मुझे पांच साल तक इस बात का पता न चल सका।

एक दिन वह औरत नहाने गई थी और मैं अपने कमरे में आंखें बन्द किये लेटा था। उसके पिता के घर की दो दासियों को उसकी जादूगरी का का हाल मालूम था। वे दोनों उस वक्त मेरे सिरहाने बैठीं पंखा झल रही थीं। मुझे सोता समझकर वे आहिस्ते-आहिस्ते बातें करने लगीं।

एक बोली, "हमारी रानी बड़ी बेरहम है कि अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदमी को धोखा दे रही है।"

दूसरी ने कहा, "तू सच कहती है। वह हमेशा शाम के वक्त बादशाह को एक ऐसा शरबत पिला देती है,

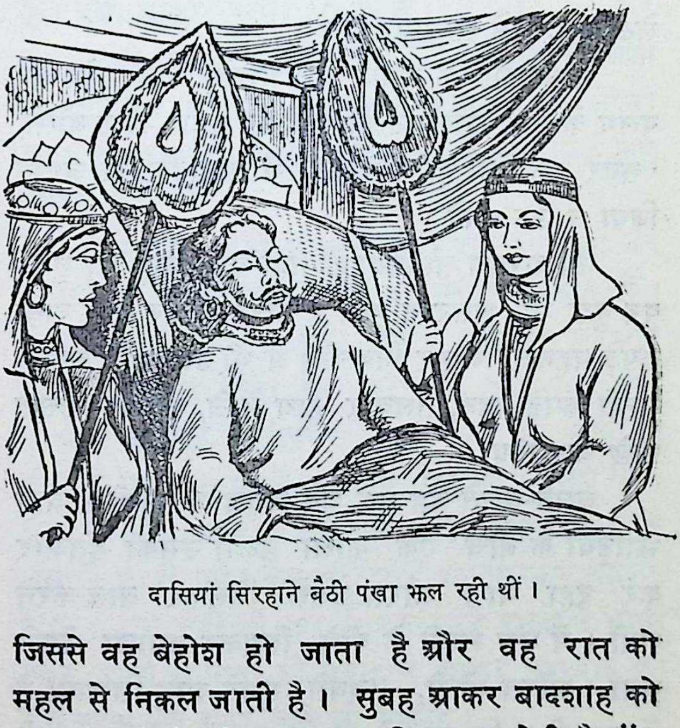

दासियां सिरहाने बैठी पंखा झल रही थीं।

जिससे वह बेहोश हो जाता है और वह रात को महल से निकल जाती है। सुबह आकर बादशाह को कुछ सुंघाती है और इस तरह फिर जगा देती है।"

दासियों की बातें सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ, लेकिन मैं चुपचाप लेटा रहा। मेरी औरत नहाकर आई तो हमने खाना खाया। खाना खाने के बाद मैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आराम करने के लिए लेट गया। औरत रोज की तरह आज भी शरबत का प्याला पिलाने के लिए लाई। मैंने प्याला उसके हाथ से ले लिया और उसकी आंख बचाकर उस शरबत को फैंक दिया। फिर इस तरह लेट गया, जैसे सो गया होऊं।

आधी रात के समय वह औरत उठी और मेरे पलंग के पास आकर उसने एक मंत्र पढ़ा। फिर बोली, "सबेरे तक ऐसी ही गहरी नींद में सोना कि मेरे जगाये बिना न उठ सको।"

मैंने शरबत तो पिया ही नहीं था। जादू का मुझ-पर कुछ भी असर न हुआ। जरा-सी देर बाद रानी कपड़े पहनकर बाहर निकली। मैं भी उठा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहन, तलवार हाथ में ले, चुपचाप उसके पीछे चल दिया।

चलते-चलते वह एक घने जंगल में पहुंची। वहां झाड़ियों के बीच एक काला हब्शी उसका इंतजार कर रहा था। औरत उससे मिलकर बातें करने लगी। मैं एक झाड़ी के पीछे छिपकर तमाशा देखने लगा। औरत बोली, "जबसे तुमने जादू सिखाया है मैं चाहती हूं कि तुम्हारे ही साथ रहूं और जादू की और बातें सीखूं। मगर मेरे मां-बाप ने मुझे यहां के बादशाह से ब्याह दिया है। मेरा दिल महल में नहीं लगता। अब तुम जादू की मुझे और बातें सिखाने का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वादा करो तो मैं इस बड़े शहर को एक मिनट में वीरान बना डालूं और ऐसा सुनसान करदूं कि इसमें उल्लू बोलने लगें। अपने आदमी को पत्थर का बना दूं। बस, तुम्हारे इशारे की देर है।

हब्शी ने कहा, "तुम्हें कुछ भी सिखाने की अभी मुझे फुरसत नहीं है। आजकल मैं कुछ और जरूरी काम कर रहा हूं। जब फुरसत मिलेगी तब तुम्हें कुछ बताऊंगा।"

इसी तरह दोनों में बातें होंती रहीं। काफी देर हो गई तो उससे आज्ञा लेकर वह महल को चल दी। मैं वहीं झाड़ी में छिपा बैठा रहा। मुझे औरत और हब्शी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। औरत के जाने के बाद जादूगर भी वहां से चला और उस झाड़ी के पास से गुजरा, जिसमें मैं छिपा बैठा था। उसके पास आते ही मैंने तलवार का एक ऐसा हाथ मारा कि उसकी आधी गर्दन कट गई और वह गिरकर तड़फने लगा। उसे वहीं छोड़कर मैं एक दूसरे रास्ते से भागा और रानी से पहले ही महल में आकर चारपाई पर इस तरह लेट गया, जैसे सो रहा हूं।

जब सुबह उठा तो मेरी औरत अपने पलंग पर पड़ी सो रही थी। मैं उसे सोता छोड़कर दरबार में चला गया। मेरे जाने पर वह उठी उसे। किसी तरह हब्शी के घायल होने की खबर मिल गई। मैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दरबार से वापस आया तो देखता क्या हूं कि उसने काले कपड़े पहन रक्खे हैं और बैठी रो रही है।

मैंने रोने का कारण पूछा तो उसने बहाना बनाया। बोली, "आज मुझे तीन बुरी खबरें मिली हैं। एक तो यह कि मेरी प्यारी मां मर गई। दूसरी यह कि मेरा बाप लड़ाई में मारा गया। तीसरी यह कि मेरा भाई किसी ऊंची जगह से गिरकर घायल हो गया है।"

मैं यह बातें सुनकर चुप रहा, क्योंकि उसके शोक की असली वजह मुझे मालूम ही थी। रानी देर तक रंज करती रही और आंसू बहाती रही। फिर उसने मुझसे कहा, "मेरा दिल बुझ गया है। मैं चाहती हूं कि अब एक मकबरा बनवाकर उसमें रहूं और कोई दूसरा आदमी उस मकबरे में मेरे पास न आने पावे।" मैंने कहा ठीक है।

उसने एक बड़ा बढ़िया मकान बनवाया और चुपके-चुपके अपने हब्शी उस्ताद को उस मकान में ले आई। औरत ने उसे ऐसी दवाएं दी थीं कि वह अबतक जिन्दा था, मगर आधी गर्दन कट जाने से उसकी हालत खराब हो गई थी। वह बातचीत नहीं कर सकता था। रानी दिनभर बैठी-बैठी उसकी दवा-दारू करती रहती। कभी-कभी मुझसे बात करने को आ जाती थी। मैं सबकुछ जानता था, मगर मैं ऐसा दिखाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहा कि मैं कुछ भी नहीं जानता। बहुत दिनों के बाद एक दिन मैं उस मकान में गया कि देखूं, जादूगर की क्या हालत है। एक तरफ को छिपकर औरत की बातें सुनने लगा। वह उस हब्शी से कह रही थी, "बड़ा ताज्जुब है कि इतना वक्त हो गया, लेकिन तुमने मुझसे एक बात भी नहीं की। मुझे इतना भी तो मालूम नहीं कि तुम्हें किसने घायल किया। मालूम हो जाय तो ऐसा बदला लूं कि वह भी याद करे।"

रानी के मुंह से यह सुनकर मुझे इतना गुस्सा आया कि मुझसे न रुका गया। मकान से बाहर निकला और ज़ोर-से कहा, "ओ गुम्बद, तू क्यों इस जादूगरनी को और इस देव को निगल नहीं जाता?" मेरी आवाज औरत ने सुन ली। पागलों की तरह झपटकर बाहर निकली और बोली, "ए दुष्ट, क्या तूने ही मेरे उस्ताद को घायल किया है?"

मैंने कहा, "हां मैंने ही इसे मारा है। तू भी इसी लायक है कि कत्ल कर दी जाय।" यह कहकर मैंने रानी को मारने के लिए तलवार उठाई कि उसने झट एक ऐसा मंत्र पढ़ा कि तलवार मेरे हाथ से छूटकर गिर पड़ी। फिर उसने कहा, "मैं हुक्म देती हूं कि तू जादू के असर से आधा पत्थर का हो जा।" उसके यह कहते ही मैं आधा पत्थर का हो गया। उसने उठाकर मुझे इस जगह बैठा दिया, जहां मैं इस वक्त हूं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर उसने मेरी प्रजा से कहा कि तुम रोज अपने बादशाह के कोड़े लगाया करो। मेरी प्रजा मुझे बहुत चाहती थी। किसीने उसकी बात न मानी। इस बात से चिढ़कर औरत ने मेरे शहर को तालाब और मेरी प्रजा को मछलियां बना दिया। मेरी राज-धानी में सब धर्मों के लोग रहते थे। ये जो सफेद मछलियां हैं, वे मुसलमान हैं। लाल मंजूसी है। काली ईसाई हैं। पीली यहूदी हैं। रानी अब भी कभी-कभी उस तालाब पर जाती है और मेरी प्रजा से कहती है कि बादशाह के कोड़े मारने की शर्त मंजूर करो तो तुम्हें मछलियों से फिर आदमी बना सकती हूं,

रानी सौ कोड़े रोज मारती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मगर कोई उसकी बात नहीं मानता। अब वह रोज सबेरे आती है। खुद मेरी पीठ पर सौ कोड़े मारती है, फिर उसी मकान में हब्शी के पास चली जाती है।"

यह हाल सुनाकर वह नौजवान रोने लगा। फिर दोनों हाथ उठाकर दर्दभरी आवाज में दुआ मांगने लगा, "ए खुदा, मैं तेरे इंसाफ की राह देख रहा हूं। अगर तेरी यही मर्जी है कि मैं इसी तरह जुल्म सहता रहूं तो मैं इसपर भी राजी हूं।"

बादशाह ने उससे पूछा, "इस वक्त वह औरत कहां है?"

उसने जबाब दिया, "शायद वहीं हब्शी की दवा-दारू की फिक्र में गई हो। लेकिन सबेरे वह कोड़े लगाने जरूर आयगी"

बादशाह ने उस युवक को तसल्ली दी और निकलकर उस मक़बरे में गया। जाकर देखता क्या है कि हब्शी पलंग पर पड़ा हुआ है और मकान के अन्दर सैकड़ों कन्दील जल रहे हैं।

बादशाह ने जाते ही तलवार का ऐसा वार किया कि हब्शी को मौत के घाट उतार दिया। फिर उसकी लाश कहीं छिपाकर रख दी और आप बगल में तलवार दाब मुंह ढककर पलंग पर लेट गया।

सुबह के वक्त वह औरत किले में आई। पहले उसने नौजवान के कोड़े लगाये। वह चीखता-चिल्लाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहा, मगर उसे तनिक भी रहम न आया। पूरे सौ कोड़े मारकर वह मकबरे में आई और बादशाह को हब्शी समझकर कहने लगी, "बड़े गजब की बात है। इतना वक्त निकल गया, मैं दिन-रात तुम्हारी दवा-दारू कर रही हूं। मगर तुम कुछ बोलते ही नहीं।"

बादशाह ने धीमी आवाज में कहा, "आज मुझे कुछ आराम है, मगर मेरी खातिर तूने जो कुछ किया वह मुझे पसन्द नहीं है। तू मेरा बदला लेने के लिए रोज बादशाह को मारती है, मगर उसके चीखने-चिल्लाने से मेरी तकलीफ और बढ़ जाती है। तेरे इस जुल्म से मैं दुखी हूं और मेरा जी नहीं चाहता कि तुझसे बोलूं।"

औरत ने कहा, "अगर आपकी यही इच्छा है कि मैं उसे सजा न दिया करूं और उसे असली हालत में ले आऊं तो मैं यह भी कर सकती हूं।"

बादशाह ने कहा, "हां मैं यही चाहता हूं।"

औरत उसी वक्त गई और उस नौजवान के पास जाकर उसने मंत्र पढ़ा। वह अपनी असली हालत में आ गया। औरत ने उससे कहा, "तू फौरन इस किले से निकल जा। फिर कभी यहां न आना, नहीं तो जान से मारा जायगा।"

नौजवान अपने असली रूप में आ गया, यही उसके लिए क्या कम था! वह चुपचाप किले से निकल गया और झाड़ियों में छिपकर बैठ गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औरत फिर मकबरे में आई और बादशाह को अपना हब्शी उस्ताद समझकर कहने लगी, "लो मैंने तुम्हारा कहना कर दिया है। अब तो तुम मुझसे बात करो कि जिससे मेरी तसल्ली हो।"

बादशाह ने कहा, "तूने इस शहर को पहाड़ और यहां के रहनेवालों को मछलियां बना रक्खा है। वे मछलियां रोज रात को मुझे कोसती हैं। इसलिए मैं अच्छा नहीं हो सकता। इन सबको भी उनके असली रूप में ले आ।"

औरत ने वहीं खड़े-खड़े मंत्र पढ़ा। मछलियां, तालाब और पहाड़ सब अपनी असली सूरत में आ गये।

औरत ने बादशाह से कहा, "क्यों अब तो तुम खुश हो।"

बादशाह ने आहिस्ते से कहा, "हां, अब मैं खुश हूं। तू मेरे सिरहाने आकर बैठ जा और मुझसे बातें कर।"

औरत खुश होकर आगे बढ़ी तो बादशाह ने तलवार खींचकर ऐसा बार किया कि उसकी गर्दन कट गई और उसका सिर दूर जाकर गिरा। बादशाह ने उसकी लाश को वहीं छोड़ा और वहां से बाहर निकलकर उस नौजवान को ढूंढ़ने लगा। वह मिल गया। दोनों बड़े प्रेम से गले मिले। बादशाह ने उसे सारा हाल सुनाया और कहा, "अब कोई फिक्र न करो, मैंने हब्शी और औरत दोनों का खातमा कर दिया है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काले टापू के बादशाह ने उसे धन्यवाद दिया।

बादशाह ने कहा, "मुझे तुमसे बड़ी मुहब्बत हो गई है। मेरे कोई बाल-बच्चा नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुमको अपना बेटा बनाकर अपने राज्य का वारिस बना दूं।" इसके बाद वे लोग फौज को लेकर वहां से रवाना हुए। एक बरस के बाद अपने शहर में पहुंच गये। बादशाह की वापसी पर सारी प्रजा बड़ी खुश हुई। वजीरों ने भेंटें दीं।

बादशाह ने काले टापू के बादशाह को अपना बेटा और वारिस बना दिया। दोनों राज्य एक हो गये। इसके बाद बादशाह ने मछेरे को बुलवाया और उसे बड़ी जागीर दी, क्योंकि काले टापू के बादशाह का छुटकारा उसीकी वजह से हुआ था।

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिबि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरजराव
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानी
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. आनबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे...
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक [redacted] ४० नये

४० [redacted]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu